अध्यक्ष का संदेश

मैं सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) को क्रियान्वित करने वाले सभी हितधारकों के प्रति उनके निरंतर समर्थन और समझ के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूंगा। 1968 में अपनी स्थापना के बाद से, व्यावहारिक प्रशिक्षण बोर्ड (पूर्वी क्षेत्र) [बीओपीटी (ईआर)], जो भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तहत एक निकाय है, प्रशिक्षु (संशोधन) अधिनियम, 1973 और 1986 के तहत केंद्र सरकार के प्रमुख कौशल विकास कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भागीदारों में से एक बन गया है। बीओपीटी (ईआर) पिछले चार दशकों से इंजीनियरिंग के साथ-साथ सामान्य स्ट्रीम में स्नातक और डिप्लोमा उत्तीर्ण छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण कौशल विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। बीओपीटी (ईआर) ने पूर्वी क्षेत्र में अपनी वार्षिक क्षमता को 1970 में लगभग 400 प्रशिक्षुओं से बढ़ाकर 2024-25 में 1.3 लाख से अधिक प्रशिक्षुओं तक लगातार बढ़ाया है, जिसके कारण राष्ट्र के प्रति इसकी सेवा प्रशंसा की पात्र है।

बीओपीटी (ईआर) की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक पूर्वी क्षेत्र के तकनीकी और गैर-तकनीकी संस्थानों और उन उद्योगों के बीच एक मजबूत इंटरफेस विकसित करना है, जिन्हें प्रतिस्पर्धी बाजार में अपने विकास और स्थिरता के लिए ऐसे योग्य कुशल मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है। यह वह भूमिका है जो तकनीकी और सॉफ्ट-कौशल विकास के माध्यम से हमारे प्रशिक्षुओं को दी जाने वाली निगरानी की प्रकृति को निर्धारित करती है।

जब हम भविष्य की ओर देखते हैं, तो एक बात निश्चित है - कुशल जनशक्ति एक प्रमुख संसाधन होगी तथा भारत और विश्व भर में इसकी अत्यधिक मांग होगी। हमारी चुनौती न केवल उद्योगों में अधिक प्रशिक्षण सुविधाएं सृजित करना है, बल्कि कार्य स्थलों पर प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए उद्योगों को मार्गदर्शन देना भी है। इस प्रकार, इसका उद्देश्य ऐसे विचार उत्पन्न करना है जो अंततः पूर्ण कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो समाज को प्रदर्शित करेंगे और लोगों को ऐसे क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रशिक्षित करेंगे जहां उनके विशिष्ट ज्ञान और कौशल को महत्व दिया जाएगा।

21वीं सदी के समाज को ज्ञान आधारित समाज कहा जाता है। परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं और ज्ञान और कौशल पर जोर दिया जा रहा है। बीओपीटी (ईआर) में हम छात्र-अनुकूल और छात्र-छात्रा इमेजन तैयार करके "ऑन-द-जॉब" प्रशिक्षण में नवाचार निर्माण के दर्शन का अभ्यास कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य शिक्षा के दौरान संस्थान द्वारा छात्रों को दी जाने वाली सुविधाओं और उद्योगों की कौशल संबंधी आवश्यकताओं के बीच के अंतर को पाटना है। इस अंतर को दोनों छात्रों और प्रशिक्षण संस्थानों के लिए जीत वाली स्थिति बनाकर कम किया जा सकता है ताकि कौशल आधारित समाज के विकास में एक-दूसरे की मदद की जा सके। उद्योगों में छात्रों के एक वर्ष के शिक्षुता प्रशिक्षण के दौरान हम प्रशिक्षण की गुणवत्ता की निरंतर निगरानी करते हैं जिसका उद्देश्य एक वर्ष के बाद बेहतर कुशल कार्मिकों का विकास करना है जो स्वतंत्रता, रचनात्मकता के साथ-साथ व्यावहारिक क्षमता प्रदर्शित कर सकें और जो विभिन्न क्षेत्रों में समाज में योगदान दे सकें। पिछले एक वर्ष के दौरान हमने एनईपी-2020 में परिकल्पित विभिन्न सुधार किए हैं, जिससे अधिक विश्वविद्यालयों/उच्च शिक्षा संस्थानों को अप्रेंटिसशिप एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम (एईडीपी) के तहत पाठ्यक्रम अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। एनएटीएस मूल्यांकन एवं क्रेडिट प्रणाली की शुरूआत के साथ, यह कार्यक्रम निश्चित रूप से सफल शिक्षुओं को जारी किए जाने वाले प्रवीणता प्रमाणपत्र के मूल्य संवर्धन में सुधार करेगा। जैसा कि हम 2025-26 में 1000K+ शिक्षुओं को प्रशिक्षित करने के इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं, मैं आपके निरंतर समर्थन की बहुत सराहना करता हूँ।

श्री गोविंद जयसवाल, भा.प्र.से.
अध्यक्ष, बीओपीटी (ईआर)